लघु शोध परियोजना का अंतिम वृत्तांत

(PROJECT COMPLETION REPORT)

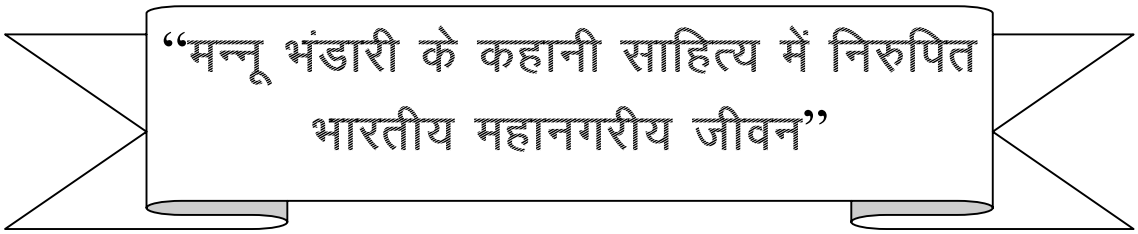

(प्रि.डॉ. एस. वी. मांगुकिया)

(डॉ. एस. बी. आसोदरिया)
प्रधान शोधकर्ता
श्रीमती आर. आर. पटेल महिला कॉलेज,
राजकोट –01 (गुज.)

लघु शोध परियोजना का अंतिम वृत्तांत (PCR)

वर्ष : 2011-13

U.G.C. Minor Research Project

:: परियोजना शीर्षक ::

'मन्नू भंडारी के कहानी साहित्य में निरुपित भारतीय महानगरीय जीवन'

प्रस्तुत कर्ता

डॉ. संजय बी. आसोदरिया

एसोसिएट प्रॉफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष,

श्रीमती आर. आर. पटेल महिला आर्ट्स एन्ड कोमर्स कॉलेज,

'टोपलेन्ड विद्याभवन', एसट्रोन सोसायटी, अमीन मार्ग,

राजकोट (गुज.) – 360001

निवेदन

मैं डॉ. एस. बी. आसोदरिया, एसोसिएट प्रॉफेसर, हिन्दी विभाग, श्रीमती आर. आर. पटेल महिला आर्ट्स–कोमर्स कॉलेज, राजकोट की ओर से प्रमाणित करता हूँ कि प्रस्तुत 'मन्नू भंडारी के कहानी साहित्य में निरुपित भारतीय महानगरीय जीवन' विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से एक लघुपरियोजना के रूप में मंजुर हुआ है। मैंने अपनी इस योजना सम्बन्धी सभी पहलुओं का यथासंभव अध्ययन, संशोधन कर नितान्त नवीन तथ्यों को स्थापित किया है। यह परियोजना कार्य मेरा अपना मौलिक सर्जन है। जो मैंने निर्धारित समयावधि में संपन्न किया है। इसके लिए मैं अपनी कॉलेज एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – पूणे कार्यालय से जुड़े सभी संकायों एवं कर्मियों का शुक्रगुज़ार हूँ, जिन्होंने समय–समय पर यथायोग्य मार्गदर्शन और दिशानिर्देश देकर मेरे कार्य को समयावधिमें समाप्त करने का अवसर प्रदान किया।

(डॉ. एस. बी. आसोदरिया)
प्रधान शोधकर्ता
श्रीमती आर. आर. पटेल महिला कॉलेज,
राजकोट –01 (गुज.)

'मन्नू भंडारी के कहानी साहित्य में निरुपित भारतीय महानगरीय जीवन'

स्वाधीनता के पश्चात् भारतीय समाज में औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप नगरों और महानगरों का जन्म हुआ जहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति गाँवों की परंपरागत संस्कृति से नितान्त भिन्न थी और है। आज महानगर जनसंख्यावृद्धि, बेकारी, भुखमरी, आवास अभाव, घुटन, अकेलापन, अपराधीकरण जैसी समस्याओं के केन्द्र बन गये हैं। महानगरीय आदमी दूसरों से ऊपर उठने और कुछ ज़्यादा पाने की कोशिश में दौड़ने लगा है। इस दौड़ती–भागती ज़िन्दगी को आज की कहानी अत्यन्त संवेदनशीलता एवं ईमानदारी से चित्रित कर रही है।

भारतीय महानगरों में उठी हलचल एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन की प्रक्रिया को आधुनिक युग की शीर्षस्थ महिला कथाकार मन्नू भंडारी ने यथार्थता के साथ उद्घाटित किया है। मन्नूजी ने महानगर में रहकर महसूस किया कि पाश्चात्य सभ्यता का आक्रमण एवं संक्रमण, अंधानुकरण तथा फैशनपरस्ती के परिणामस्वरूप महानगरों में नये–नये प्रतिमान उभर रहे हैं। परिणामस्वरूप मन्नूजी ने स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में स्वच्छन्दता, पीढ़ी में बढ़ता अंतर, अकेलापन, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, घुटन, विभक्त परिवार प्रथा एवं मूल्यहीन राजनीति आदि समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों का कथ्य बना दिया।

यहाँ गाँव में परंपरागत एवं मूल्याधारित जीवन बसर करने वाला एक सीधा–साधा ग्रामीण मनुष्य के बनते, बदलते एवं बिगड़ते चेहरे का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत शोध का एक हिस्सा है। महानगरीय चकाचौंध के पीछे छिपे अंधकार से बेखबर ग्रामीण व्यक्ति अपनी परंपरा तथा परिवेश से कटकर शहर की तरफ दौड़ा जा रहा है। पश्चात् न वह पूरी तरह शहर का हो सकता है, न गाँव वापस जा सकता है। ऐसे पलायन कर रहे ग्रामीण लोगों को महानगरीय समस्याओं से अवगत कराना भी इस प्रकल्प का उद्देश्य रहा है। महानगरीय जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं का चित्रण मन्नूजी की कहानियों का हिस्सा है।

प्रस्तुत लघु परियोजना को छः अध्यायों में विभक्त किया गया हैं जो निम्नवत् हैं –

1- कहानी और महानगरीकरण : एक परिचय
2- समकालीन हिन्दी कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन
3- साहित्यकार मन्नू भंडारी : एक परिचय
4- मन्नू भंडारी की कहानियों में महानगरीय जीवन
5- महानगरीय अर्थव्यवस्था एवं राजनीति
6- उपसंहार

1- कहानी और महानगरीकरण : एक परिचय :–

आज़ादी के बाद हर क्षेत्र में भारी क्रान्तिकारी परिवर्तन दर्ज हुये। इस परिवर्तन का असर साहित्य पर भी पड़ा। साहित्य के क्षेत्र में कहानी का स्वरूप बदला, उसमें नयी युग चेतना के साथ जीवनस्तर एवं पद्धति दोनों में आश्चर्यजनक बदलाव की प्रक्रिया दर्ज हुई। जीवन में गतिशीलता एवं चेतना का संचार हुआ। गाँव में बसे मानव परंपरागत साधनों को छोड़कर कम मेहनत के अवेज में निश्चित और ज़्यादा पाने की ललक में नगर की ओर आकृष्ट हुए।

इस दौर में नगरों एवं महानगरों का विकास भी तेजी से हो रहा था, जो अपनी ग्रामीण प्रकृति एवं प्रवृत्ति से भिन्न पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करने लगी थी। परिणामस्वरूप इस दौर में महानगरीय जीवन से जुड़ी कहानियों पर सर्वाधिक विचार विमर्श हुआ।

सांप्रत समय में विश्व के सभी भागों में बड़ी मात्रा में ग्रामीण जन महानगरीय जीवन से आकर्षित होकर उसकी तरफ उन्नमुख हुए हैं और हो रहे हैं। महानगरों का तथाकथित आधुनिक और प्रगतिशील वातावरण अपनी ऊपरी चमक–दमक से हमें भले ही आकर्षित क्यों न करें किन्तु भीतर ही भीतर उसने झूठ, फरेब, शोषण, भ्रष्टाचार एवं अन्याय की ऐसी दीवार खड़ी कर दी है कि जिसमें हमारे मूल्य और विश्वास का दम घुट गया है। अब इन तथ्यों को केन्द्र में रखकर नगरों से पलायन और महानगरों के जन्म के पीछे के कारणों को समझ ने का प्रयत्न करेंगे।

2- समकालीन हिन्दी कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन :–

स्वाधीनता के पश्चात् औद्योगीकरण का विकास एवं शिक्षा से उत्पन्न स्वच्छन्दता समकालीन कथाकारों के लिए चुनौती बनकर आयी। उन्होंने साफ़ महसूस किया कि महानगरों में पाश्चात्य सभ्यता के संक्रमण, अंधानुकरण एवं फैशनपरस्ती के परिणामस्वरूप अकेलापन, टूटन, घुटन, अवैध सम्बन्ध, स्त्री–पुरुष की स्वच्छंदता, पीढ़ी में बढ़ता अंतर, शोषण, भ्रष्टाचार और राजनीति में बदलते मूल्य जैसे कतिपय नये–नये प्रतिमान उभर रहे हैं। इन अप्राकृतिक और असंस्कारिकता को वाचा देने का काम समकालीन कहानीकारों ने किया हैं।

इस बदली हुई सामाजिक चेतना के स्तर पर उभरी नयी और सशक्त पीढ़ी जिसमें कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मालती जोशी, कृष्णा सोबती, हरिशंकर परसाई, शिवानी, कृष्णा अग्निहोत्री, उषा प्रियंवदा, सुधा अरोडा, मंजुल भगत, यादवेन्द्र शर्मा, गिरीराज किशोर, यशपाल आदि कहानीकारों ने महानगरीय आधुनिक ज़िन्दगी के सभी कोणों को कथात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की।

इस प्रकार महानगरीय जीवन ऊपर से जितना सहज, सरल, आकर्षक एवं सुखमय दीखता है उतना नहीं है। पाश्चात्य प्रभाव को तोड़–मरोड़ कर धारण करने की प्रवृत्ति ने महानगरीय जीवन को अंदर–बाहर दोनों स्तर पर बुरी तरह झकझोर दिया है। इन विषम परिस्थितियों से बेखबर ग्रामीण जन नगर तथा महानगरों की तरफ प्रयाण कर रहे हैं जो उसके लिए घातक है।

3- साहित्यकार मन्नू भंडारी : एक परिचय :–

तृतीय अध्याय में मन्नू भंडारी के सामाजिक व्यक्तित्व की चर्चा विभिन्न पक्षों के आधार पर की गई है जिसमें जन्म, माता–पिता, बाल्यकाल, शिक्षा–दीक्षा, शादी तथा लेखन आदि विभिन्न पहलुओं को उपभागोंमें बाँट कर उसकी विस्तार से स्पष्टता करने का प्रयत्न किया गया है। संक्षेप में कहे तो मैंने मन्नूजी का जन्म, माता–पिता का योगदान, लेखकीय प्रेरणा स्रोत्र, युगीन परिस्थितियाँ तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में बताया है। मन्नूजी के पिता एक अच्छे लेखक थे और माता अच्छी गृहिणी जिनके संस्कार तथा लेखन प्रवृत्ति मन्नूजी को विरासत में मिली थी। अध्याय के उतरार्ध में मन्नूजी के साहित्यिक रचना संसार पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। साहित्यिक पक्ष में लेखन की प्रेरणा, रूचि, विकास आदि का उल्लेख किया है। इसके अलावा हिन्दी से रूपान्तरित साहित्य, पुरस्कार एवं सम्मान की चर्चा की गई है।

4- मन्नू भंडारी की कहानियों में महानगरीय जीवन :–

चतृर्थ अध्याय हमारे आलोच्य विषय का मुख्य और महत्त्वपूर्ण अध्याय है। स्वातंत्र्योत्तर युगीन अस्तित्ववादी चिंतन से प्रभावित होकर लिखने वाली सार्थक लेखिक मन्नूजी एक विशिष्ट प्रकाशदीप है। मन्नूजी ने भारतीय समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में घटित हलचल तथा परिवर्तन की परिस्थितियों को विभिन्न रूपों में चित्रित किया हैं। क्रुरताएँ, जटिलताएँ, आर्थिक विषमताएँ, स्वच्छन्दता, भ्रष्टाचार, घुटन एवं अकेलापन आदि महानगरीय जीवन की समस्याओं का चित्रण मन्नूजी की कहानियों का मुख्य स्वर हैं।

इस प्रकार गाँव में जीवन यापन के साधनों में कमी, बेरोज़गारी, निम्न जीवन स्तर आदि में वृद्धि होती चली गई, तो दूसरी ओर औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र के रूप में नगर और महानगर, रोज़गार के विशाल स्त्रोत के रूप में उभर कर आये। इस तरह ग्राम क्षेत्रों में फैली बेरोज़गारी और अत्यन्त सीमित जीविका के साधनो के कारण भारी संख्या में ग्रामीण नगरों एवं महानगरों की ओर जाने के लिए बाध्य हुये।

5- महानगरीय अर्थव्यवस्था एवं राजनीति :–

गाँव का आर्थिक ढाँचा कृषि पर निर्भर है जबकि शहर का ढाँचा पूरी तरह से यंत्र एवं उद्योग पर। महानगरीय समाज के विकास को भी इसी संदर्भ में देखना चाहिये।

महानगरों का आर्थिक जीवन गाँवों से नितान्त भिन्न स्वरूप लिए हुए है। महानगरों में लघु उद्योगों के साथ–साथ बड़े उद्योग भी मौजूद है। इस प्रकार यहाँ पर आर्थिक आधार पर उच्च, मध्य और निम्न वर्ग मौजूद है। आर्थिक स्तर पर बड़ी विषमता नज़र आती है। महानगरों में अर्थ का महत्त्व बढ़ा है जिससे अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं।

सामाजिक तथा आर्थिक केन्द्र समान महानगरों में राजनीति का भी इतना ही विकास हुआ नज़र आ रहा है। महानगरों में राजनीति के कुछ नवीन संदर्भ उभरे हैं जिसमें मूल्यनिष्ठ राजनीति के बजाय कुर्सी की छीना–झपटी, अपराधीकरण जैसी मूल्य विघटन की स्थिति देखने को मिल रही है। इस प्रकार देखे तो महानगरों में राजनैतिक मूल्यों का तेजी से क्षरण हुआ है। राष्ट्रीय एकता, सामाजिक उत्थान, देशप्रेम आदि मूल्य स्वार्थी एवं अवसरवादी नेताओं के वाणी–विलास का माध्यम बन गया है।

6- उपसंहार :–

यद्यपि आज भी भारतवर्ष को गाँवों का देश कहा जा सकता है फिर भी नगरीकरण और औद्योगीकरण की तीव्रगति के कारण देश में कस्बें नगर और नगर महानगर बनते जा रहे हैं। महानगर का जीवन उस गाँव के अपनेपन व स्नेहाशक्ति जीवन का अनुभव न होकर बेगानेपन और शुष्कता का जीवन है। शहरों का उन्मुक्त वातावरण, स्वस्थ प्रतियोगिता, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यतानुसार आगे बढ़ने की सुविधा आदि उसके मन में शहर के लिए मोह पैदा करते हैं। किन्तु शहरों के संघर्ष से अपरिचित इन ग्रामीणों के मन में इन शहरी जीवन की ऐसी तस्वीर बनी होती है, जिसमें शहर में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति बड़ा सुखी होता है, दुःख उससे कोसों दूर रहता है। इसलिए वह गाँव छोड़कर शहर तो आता है, परंतु गाँव से आये व्यक्ति के लिए महानगर में समायोजन का प्रयास काफी कष्टदायक एवं तनावपूर्ण अनुभव बन जाता है। महानगरों में जीविका एवं आवास की समस्या में उलझ कर व्यक्ति स्वयं को ही भूल जाता है। यांत्रिक जीवन मानवीय सम्बन्धों को मृतप्रायः बना देता है। नगरीय जीवन के तनाव एवं संघर्ष व्यक्ति को मानसिक रोगी और भोगी बना देता है। महानगरों की भिन्न जीवन शैली और भिन्न मूल्यों को स्वीकार करने और स्वयं को उनके अनुकूल ढालने में प्रायः सभी नये व्यक्ति को कठिनाई होती है।

मन्नूजी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महानगरीय जीवन का चित्रण मात्र नहीं किया, बल्कि उस मानव समाज को उत्पीड़ित करती समस्याओं के प्रति 'रेड सिग्नल' बताकर हमे सचेत भी किया है। मन्नूजी ने यथा स्थान समस्याओं के उन्मूलन की दिशा में भी कलम चलाई है। जीवन के सिमटते दायरे में व्यक्ति के अकेले पड़ने की त्रासदी भयावहता के साथ अभिव्यक्ति हुई है। मन्नूजी की कहानियाँ महानगरीय जीवन के विपरीत ध्रुवों पर खड़े असहाय, अकेला व्यक्ति की कहानियाँ हैं, जिसमें वर्णित यथार्थ को जानने के पश्चात् नगरों एवं महानगरों से लौटने के पुनर्विचार हेतु विवश करती हैं।

: संदर्भ सूची :

उपजीव्य ग्रंथ :

1- सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, नई दिल्ली – 02
2- एक कहानी यह भी, मन्नू भंडारी
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, नई दिल्ली – 02

संदर्भ ग्रंथ :

1- आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, डॉ. संजीव महाजन
अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, 4831/24, प्रहलाद गली, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली
2- नगरिय समाजशास्त्र, राजेन्द्र कुमार शर्मा
एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, बी–2, विशाल एन्कलेव, नई दिल्ली – 027
3- हिन्दी उपन्यास : सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप, डॉ. श्रीमती प्रभा वर्मा
क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, 28, शापिंग सेन्टर, करमपुरा, नई दिल्ली – 015
4- आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, डॉ. रमेश देशमुख
विद्या प्रकाशन, 125/64, के (N.T.C.) गोविन्द नगर, कानपुर – 06
5- समकालीन हिन्दी उपन्यास : महानगरीय बोध, सीमा गुप्त
राज पब्लिशिंग हाउस, 44, परनामी मंदिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर – 410
6- नवम् दशक की कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. रामेश्वर पवार
विकास प्रकाशन, 311, सी– विश्वबैक बर्रा, कानपुर – 027
7- गिरिराज किशोर की कहानियों में युग चेतना, डॉ. सुरेश कानडे
चन्द्रलोक प्रकाशन, 132, 'शिवरामकृपा', मयूर पार्क, बसंत विहार, नौबस्ता, कानपुर – 21
8- मन्नू भंडारी का रचना संसार, डॉ. षीना ईप्पन
जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.)
9- साठोतर हिन्दी उपन्यास और नगरबोध, डॉ. प्रिया नायर
जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.)
10- समांतर कहानी में यथार्थ बोध, रेखा वसंत पाटील
जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.)
11- आधुनिक हिन्दी कहानी में वर्णित सामाजिक यथार्थ, डॉ. ज्ञान चन्द शर्मा
राधा पब्लिकेशन, 4378/4- B , अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली – 02
12- हिन्दी नई कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. महेश दिवाकर
सुमन प्रकाशन, हरदेवपुरी, मंडोली रोड़, शाहदरा, दिल्ली – 93
13- हिन्दी कहानी : आठवाँ दशक, सरबतजीत
संजीव प्रकाशन, कुरुक्षेत्र, हरियाणा – 18
14- हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा
अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली – 06
15- समकालीन हिन्दी महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी चेतना, डॉ. अर्चना शेखावत
आस्था प्रकाशन, S-11, SGM हाऊस, नाटाणियों का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)